करोड़ रुपये का था इसका मुख्य कारण कर-संग्रह और अन्य प्राप्तियों में वृद्धि होना है। राजस्व से किये जाने वाले व्यय का अनुमान अब 252.87 करोड़ रुपये लगाया गया है जबकि बजट अनुमानों में यह व्यय 248.95 करोड़ रुपये आंका गया था। अब 46.61 करोड़ रुपये के पूंजीगत व्यय का अनुमान है जबकि बजट अनुमान 42.43 करोड़ रुपये का था।

3. 1971-72 के लिए 273.05 करोड़ रुपये की राजस्व-प्राप्तियों का अनुमान लगाया गया है, जबकि चालू वर्ष के संशोधित अनुमान में 254.66 करोड़ रुपये का अनुमान लगाया गया था। 18.39 करोड़ रुपये की यह वृद्धि मुख्यतः बिक्री कर, केन्द्रीय करों के हिस्से, अन्य करों और शुल्कों और केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होने वाले सहायता अनुमानों के अन्तर्गत हुई है। अगले वर्ष राजस्व से किया जाने वाला व्यय 275.94 करोड़ रुपया आंका गया है, जबकि चालू वर्ष के संशोधित अनुमान के अनुसार यह रकम 252.87 करोड़ रुपया थी। राजस्व खाते से किये जाने वाले व्यय में वृद्धि मुख्यतः सामाजिक और विकास सम्बन्धी सेवाओं और लोक-निर्माण के अन्तर्गत अधिक व्यवस्था किये जाने के कारण हुई है। पूंजीगत व्यय के लिए 39.79 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी है, जबकि चालू वर्ष के संशोधित अनुमान में 46.61 करोड़ रुपये की व्यवस्था थी। अगले वर्ष के बजट में कुल मिलाकर 14.46 करोड़ रुपये का घाटा दिखाया गया है।

4. 1971-72 के बजट में आयोजना परिव्यय के लिए 79.67 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी है। परयोजना आयोग ने 70 करोड़ रुपये के परिव्यय की स्वीकृति प्रदान की है। अधिक परिव्यय की व्यवस्था करने के लिए राज्य सरकार को साधन जुटाने के लिए और उपायों पर विचार करना होगा। राज्य की आयोजना के अतिरिक्त, केन्द्र-आयोजित योजनाओं पर 12.50 करोड़ रुपया खर्च किया जायगा। छोटे किसानों, सीमान्तिक किसानों और कृषि मजदूरों के विशेष कार्यक्रमों और गांवों में बेरोजगारी दूर करने की योजनाओं के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा लगभग 8 करोड़ रुपये की व्यवस्था की जायगी।]

17.57 hrs.

DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS (MYSORE), 1970-71

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA): I beg to present a statement showing Supplementary Demands for Grants in respect of the State of Mysore for 1970-71. With your permission, Sir, I also lay the explanatory statements. Rather than reading them here, I would like to lay them on the Table of the House, that is, for Orissa, Mysore and West Bengal.

MR. SPEAKER: Yes.

17.58 hrs

BUSINESS OF THE HOUSE—*Contd.*

MR. SPEAKER: Now, before we adjourn, I would like to say one thing. Some of the Members or very keen to go to their respective constituencies as a number of things are yet to be done about filing there accounts and all that. There were two suggestions either to adjourn to the third week of April of we finish the business by the 2nd. I discussed it with the Minister of Parliamentary Affairs. I got the list of business. I think, if we sit for a little overtime, say, by an hour for two days, we can finish this business by the 2nd. We will try to finish the business by the 2nd evening and then we adjourn *sine die* if it could be possible. The business was fixed only upto the 7th. Some of it has already been disposed of. The other remaining business we will finish, by sitting a little overtime, by the 2nd. I hope you will agree with it.